

सिकन्डरी स्टाईल से रोज़ मरह की चिज़ों, सानिकल और क्हेति बाज़ी की चिज़िं बनते हैं अनिं राहत मले की, लिंन अिसा न्हेनं भू- क्सेम ठीवू की २० फ़िस्दी र्ने दिये कीा और सिन्ड्रल अिंसांन ठीवू की ४ फ़िस्दी से बूँहा कर १६ फ़िस्दी, और प्हेर २० फ़िस्दी कररी की, ज़िंके प्रान्म स्टाईल प्र ठीवू की ५ फ़िस्दी है, ज़िं का फ़ान्दे बूँ है कारखानों क्मलता है- सरकार ने प्रान्म स्टाईल प्र ठीवू की ४० फ़िस्दी से क्हेता करे फ़िस्दी अिं ले की तेही स्टाईल की फ़िमें अिंस्तेर रे अोर क्हेरिलों कारखानों क् लूबा अिंसांन वाज्ब दामों प्र मले, लिंन ये बूँ है स्टाईल प्लान्ठ अिंने अिंसांन का ९० फ़िस्दी अिंस्पोरु कर दिते हैं, और क्हेरिलों कारखानों क् ब्जा क्हेजामल बी मलता है, ज़िंकी व्जे से च्हेवू अिंस्वो क्के पास मल की क्मी भू जाती है और अिंसांन न्हेनं भू प़ाता है- अिं की व्जे से म्हेनगान्नी अोर रे रोज़गारी के सांते सांते अिंरादे भी बूँ रे हैं- मीरी सरकार से मलंग है के व्हे बूँ है स्टाईल अिंस्वो क्के सांते सांते च्हेवू और क्हेरिलों अिंस्वो क्के भी वाज्ब दाम मीं स्टाईल की क्सेम ठीवू की २० फ़िस्दी से क्हेता कर प्रान्म स्टाईल की क्सेम ठीवू के बराबर कीा जा- स्टाईल की फ़िमें क्के रोज़ समाज्जर प्त्रों मीं प्रकाशु कीा जाना चांने, ज़िं से स्टाईल की क़ालाबज़ारी क्के रूका जा सके- अिं से बूँ लू क्के सांते, ग़रिब भी खूश र्हेनं गे-

"खुम शर"

श्री विजय सिंह यादव (बिहार) : मैं अपने आप क्के इस स्पेशल मेशन के सांथ एसोसिएट करता हूँ।

श्री कमल अख्तर (उत्तर प्रदेश) : मैं अपने क्के इस स्पेशल मेशन के सांथ एसोसिएट करता हूँ।

श्री नन्द किशोर यादव (उत्तर प्रदेश) : मैं, अपने क्के इस स्पेशल मेशन के सांथ एसोसिएट करता हूँ।

Concern over the miserable conditions of the weavers in the Country

श्री नन्द किशोर यादव (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदय, देश के बुनकरों की दशा आज सरकार की उपेक्षा के कारण काफी दयनीय हो गई है। कई क्षेत्रों में बुनकरों ने अपनी दयनीय हालत के कारण आत्महत्या करनी शुरू कर दी है, क्योंकि बुनकर व्यवसाय से वे अपना परिवार का लालन-पालन करने में असमर्थ हैं। उन्हें कच्चा माल उचित मूल्य पर नहीं मिल पा रहा है। चीन से सिल्क के कपड़े और सिल्क का कच्चा माल, तस्करी के द्वारा भारतीय बाजार में बिक रहा है। इन बुनकरों को सरकार की ओर से ईमानदारी से राज्य सहायता एवं अन्य सहायता भी नहीं मिल पा रही है। सरकार ने बुनकरों के लिए हालांकि कई योजनाएं शुरू की हैं, परन्तु ये योजनाएं केवल सरकारी कागजों में पूरी हो रही हैं, बुनकरों को इससे कोई विशेष फायदा नहीं हो रहा है। एक जमाने में इन बुनकरों के माध्यम से उत्पादित कपड़ा पूरे विश्व में प्रसिद्ध था और एक अंगूठी में से कई मीटर कपड़ा पार हो जाता था। दुनिया में इनके द्वारा उत्पादित कपड़े की काफी मांग है, फिर भी सरकार बुनकरों की दशा सुधारने के लिए ठीक ढंग

से काम नहीं कर पा रही है। बनारस का सिल्क उद्योग आज बंद होने के कगार पर है। आजमगढ़ के लालगंज के कई बुनकर अपना व्यवसाय बंद करके शहरों में मजदूरी के लिए पलायन कर रहे हैं।

मेरा सरकार से अनुरोध है कि बुनकरों के लिए जो योजनाएं बनी हैं, उनकी समीक्षा की जाए और बुनकरों को सीधे राज्य-सहायता एवं अन्य सहायता, विशेषकर कच्चे माल की प्राप्ति एवं उनके विपणन में सहायता की जाए।

श्री विजय सिंह यादव (बिहार) : मैं अपने को इस स्पेशल मेंशन के साथ एसोसिएट करता हूँ।

श्री कमाल अख्तर (उत्तर प्रदेश) : मैं अपने को इस स्पेशल मेंशन के साथ एसोसिएट करता हूँ।

श्री राम नारायण साहू (उत्तर प्रदेश) : मैं अपने को इस स्पेशल मेंशन के साथ एसोसिएट करता हूँ।

श्री भगवती सिंह (उत्तर प्रदेश) : मैं अपने को इस स्पेशल मेंशन के साथ एसोसिएट करता हूँ।

†श्री अबू आसिम आजमी (उत्तर प्रदेश) : मैं अपने को इस स्पेशल मेंशन के साथ एसोसिएट करता हूँ।

شری ابو عاصم اعظمی "اٹر پردیش": میں اپنے کو اس اسپیشل مینشن کے ساتھ ایسوسی ایٹ کرتا ہوں۔

Demand for change of site of the second Airport in Pune in Maharashtra

SHRI SHARAD ANANTRAO JOSHI (Maharashtra): Mr. Deputy Chairman, Sir, the Government of India has decided to construct a new international airport for Pune in the vicinity of the township of Chakan.

The proposed construction of the said airport involves displacement of a large number of villagers from the Ambethan village, including a whole community of farmers who have already been once displaced on account of the construction of the Pawana Dam only 30 years back.

The site of the proposed airport is in close vicinity of some sacred and historic monuments associated with the great saint Tukaram and requires cutting down of large tracts of forests on the western slopes of Sahyadris. The site chosen for the airport is such as to involve massive earthwork for levelling hills and filling up the ravines. The plot of land of about 7000 hectares, which was earmarked for acquisition for the development of an industrial estate (Chakan Phase-I), which was denotified later on, remains unused till date.

The farmers of the land, previously earmarked for acquisition, are willing to make that land available for the construction of the airport. The site now proposed for the airport includes some prime agricultural land that has

†Transliteration of Urdu Script.